अरैचने की कहानी

पामेला एस्पेलैंड

चित्र: सुसान कैनेडी

अरैचने की कहानी

पामेला एस्पेलैंड

चित्र: सुसान कैनेडी

इस कहानी के बारे में

प्राचीन ग्रीस बहुत बड़ा तो नहीं था, लेकिन बहुत महत्वपूर्ण था. कुल मिलाकर, यूनानी राज्यों का दक्षिण कैरोलिना के बराबर का क्षेत्रफल था. दुनिया के इस छोटे से हिस्से से कई प्रसिद्ध लोग और विचार आये.

प्राचीन यूनानी लोग काफी हद तक हमारे जैसे ही थे. 2,000 साल पहले, उनके बच्चे खेलते थे, स्कूल जाते थे और ओलंपिक खेल देखते थे. बड़े लोग काम करते थे. वे नाटक और कविताएँ लिखते थे. वे कानून बनाते थे. उनकी सरकार पश्चिमी लोकतंत्र की शुरुआत थी.

लेकिन यूनानी लोग विज्ञान के बारे में उतना नहीं जानते थे जितना हम आज जानते हैं. इसलिए, उन्होंने प्रकृति को समझाने के लिए मिथकों का इस्तेमाल किया. जब समुद्र में तूफान आया, तो उन्होंने कहा, "समुद्र के देवता पोसीडॉन क्रोधित होंगे!" जब अच्छी फसल हुई, तो उन्होंने कहा, "डेमेटर, पृथ्वी की देवी, खुश होंगी!" हालाँकि, सभी मिथकों ने प्रकृति की व्याख्या नहीं की लेकिन कुछ ने ग्रीक इतिहास के बारे में हमें ज़रूर बताया. और कुछ सिर्फ अच्छी कहानियाँ थीं.

यूनानी सभ्यता लम्बे समय तक चली, परन्तु वो सदैव कायम नहीं रह पाई. लगभग 150 ई. में रोमनों ने उस पर कब्ज़ा कर लिया. उन्होंने यूनानी देवी-देवताओं को भी अपनाया - उन्होंने बस उनके नाम बदलकर रोमन नाम रख दिए. (इस कहानी में अपोलो को छोड़कर सभी नाम रोमन हैं.) अधिकांश रोमन वास्तव में देवताओं में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन वे अच्छी कहानियाँ सुनाना पसंद करते थे. इसलिए वे मिथक बताते रहे.
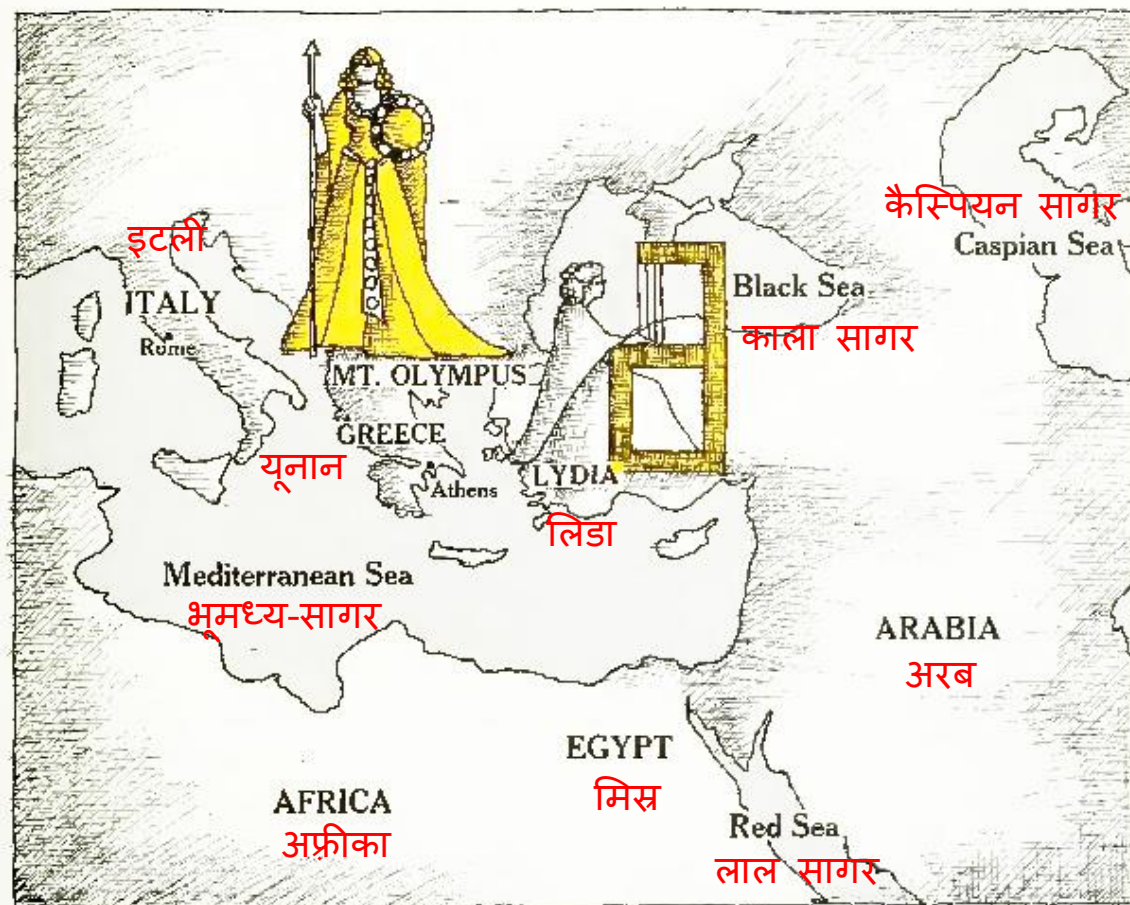
अरैचने की कहानी सबसे पहले ओविड नाम के एक रोमन कवि ने लिखी थी. ओविड की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक का नाम "मेटामोर्फोसॉज़" है. "मेटामोर्फोसॉज़" शब्द का अर्थ परिवर्तन होता है. पुस्तक की प्रत्येक कविता किसी-न-किसी प्रकार के बदलाव की कहानी बताती है. इस कहानी में अरैचने नाम की एक लड़की देवी मिनर्वा को बहुत क्रोधित कर देती है. फिर मिनर्वा, अरैचने को एक सबक सिखाती हैं... क्या? उसके लिए आप आगे पढ़ें!
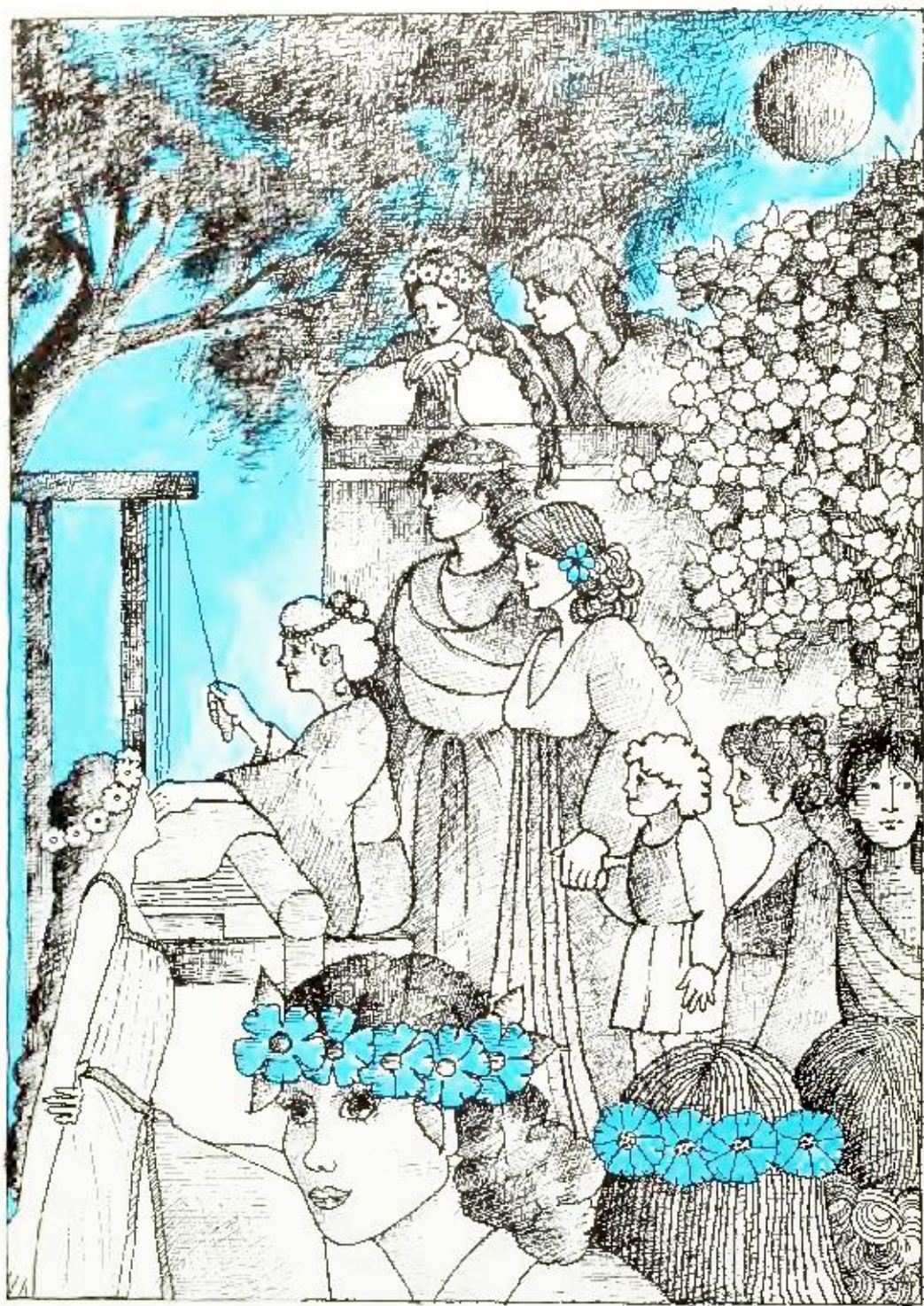
बहुत समय पहले, लिडिया राज्य में अरैचने नाम की एक लड़की रहती थी. उसके माता-पिता प्रसिद्ध नहीं थे. उसका शहर भी बहुत मशहूर नहीं था. लेकिन हर कोई जानता था कि अरैचने कौन थी.

अरैचने में एक विशेष प्रतिभा थी. वो दुनिया में किसी भी अन्य की तुलना में अधिक सुंदर कपड़ा बुन सकती थी. उसका काम देखने के लिए लोग मीलों दूर से आते थे. उसकी उंगलियाँ छोटे पक्षियों की तरह करघे पर उड़ती थीं. सूत उसके पैरों के चारों ओर इंद्रधनुष से भरे बादलों की तरह चमकीले ढेर में बिखरा होता था.

यहाँ तक कि अप्सराएँ भी अरैचने को देखने आती थीं. अप्सराएँ युवा देवियाँ थीं, जो सदैव युवा बनी रहती थीं. वे जो करना चाहती थीं उसे करने के लिए उनके पास बहुत समय होता था. उनमें से एक चीज़ जो उन्हें करना सबसे अधिक पसंद थी, वो थी अरैचने के पास बार-बार जाना. अप्सराएँ एक साथ हँसतीं और बातें करतीं और मुलायम कपड़े को छूने के लिए अपने हाथ बढ़ातीं थीं.

"ज़रा यह देखो!" वे एक दूसरे से फुसफुसाती थीं.

"क्या तुमने कभी इतनी सुंदर कोई और चीज़ देखी है?"

अरैचने ने अपना पूरा जीवन बुनाई करते ही बिताया था. वो शायद यह सुनकर खुश होती कि हर कोई उसकी तारीफ़ कर रहा था. उसकी बजाए, उसने एक बड़ी गलती की. उसे खुद पर बहुत घमंड होने लगा.

वो शेखी बघारने लगी, ''कोई भी मेरे से अच्छी बुनाई नहीं कर सकता है.''

एक दिन अरैचने ने एक नया कपड़ा बुना. यह उसके द्वारा अब तक बुना गया सबसे अच्छा कपड़ा था. अरैचने के छोटे से कमरे में उस नायाब कपड़े को देखने आए लोगों की, और अप्सराओं की भीड़ लग गई.

अप्सराओं में से एक ने अरैचने की ओर देखा. "बुद्धि की देवी, मिनर्वा, लगता है आपकी टीचर रही होंगी," उस अप्सरा ने कहा, "हर कोई जानता है कि वो कितनी अद्भुत बुनकर है,"

"ओह, नहीं," अरैचने ने उत्तर दिया, "मैंने खुद ही बुनाई करना सीखी है, मेरी कोई टीचर नहीं थी. मिनर्वा भी नहीं. वास्तव में, यदि कोई मुझसे पूछे, तो शायद मैं मिनर्वा से भी बेहतर बुनाई करती हूँ. मुझे उनके साथ प्रतियोगिता करने में खुशी होगी!"

वैसे यह कहना कोई बहुत समझदारी वाली बात नहीं थी. देवी-देवता बहुत शक्तिशाली होते थे. जब लोग शेखी बघारते थे तो उन्हें अच्छा नहीं लगता था. विशेषकर तब जब लोग, देवी-देवताओं से बेहतर होने का डींग मारते थे.
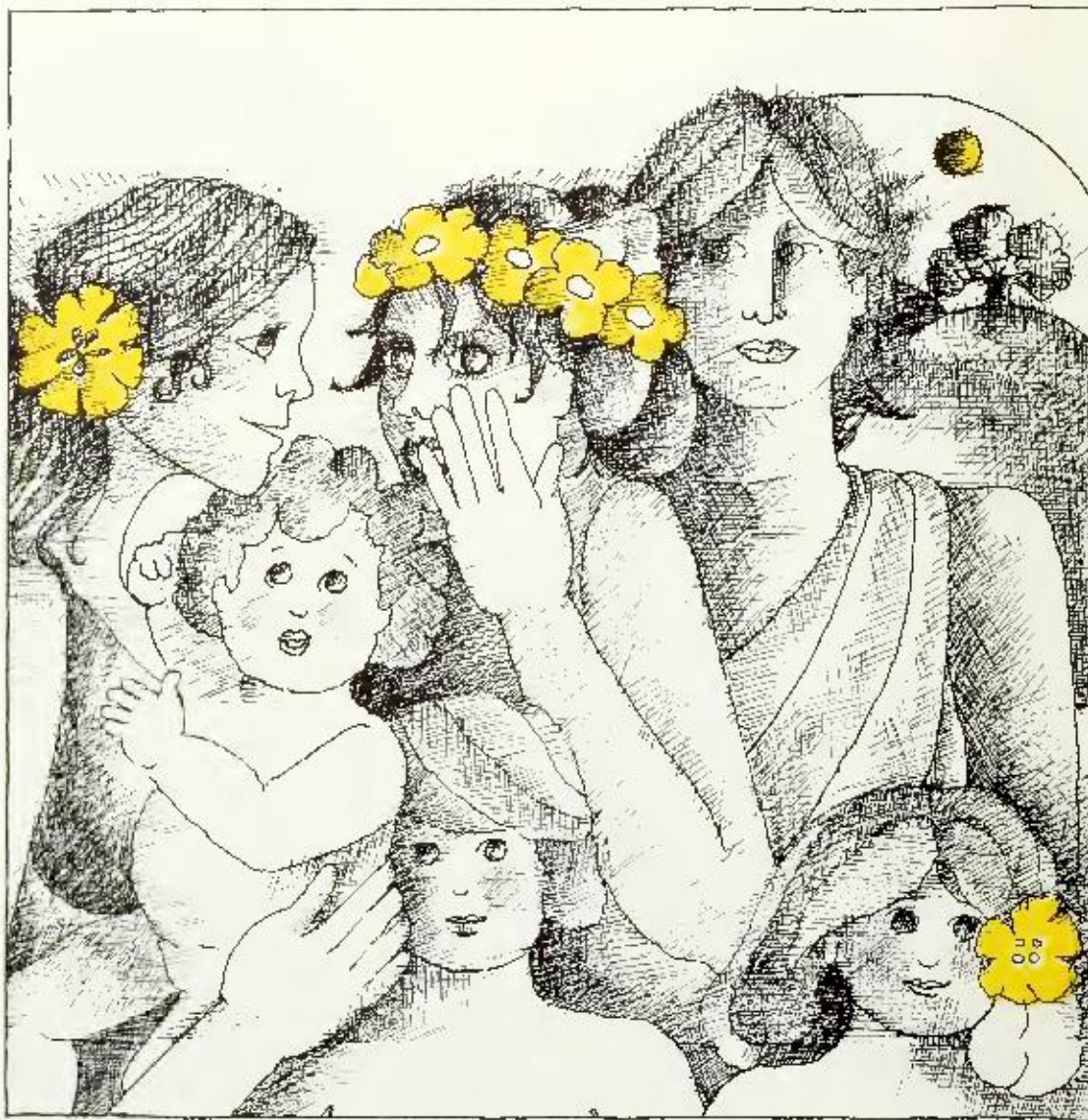
जल्द ही मिनर्वा ने स्वयं अरैचने की मूर्खतापूर्ण डींगें हांकने के बारे में सुना.

"अरैचने ने क्या कहा?" मिनर्वा ने पूछा. "ठीक है, मुझे अभी जाकर उस मामले को देखना होगा!"

इसलिए मिनर्वा ने खुद एक बूढ़ी औरत का वेश धारण किया.

मिनर्वा नहीं चाहती थीं कि कोई देखे कि वो देवी हैं. उन्होंने अपने खूबसूरत लबादे को एक पुराने लबादे से ढँक लिया. उन्होंने अपने सुनहरे बालों को एक नकली बालों विग के नीचे छिपाया. उन्होंने दिखावा किया कि सहारे के लिए उन्हें एक लाठी की ज़रुरत थी. फिर वो अरैचने से मिलने गईं.

जब मिनर्वा अंदर आईं तो अरैचने अपने करघे पर बैठी थी. उसने देवी को नहीं पहचाना. अरैचने ने एक बूढ़ी औरत को बेंत पर झुके हुए देखा.

"मैं तुम्हें कुछ दोस्ताना सलाह देने आई हूं," मिनर्वा ने कहा, "तुम कह रही थीं कि तुम देवी मिनर्वा से भी अधिक सुंदर कपड़ा बुनती हो."

अरैचने ने उत्तर दिया, "यह बिल्कुल सच है. मैंने एकदम सच कहा था."

"मैं केवल एक बूढ़ी औरत हूं," मिनर्वा ने कहा, "लेकिन मैं दुनिया के बारे में बहुत कुछ जानती हूं. मैं जानती हूं कि किसी देवी को नाराज करना कोई समझदारी की बात नहीं है. यदि मिनर्वा ने कभी सुना कि तुमने क्या कहा था, तो वो तुम्हारे साथ कुछ भयानक न कर बैठें. तुम खेद जाहिर करो? मिनर्वा एक अच्छी देवी हैं. वो तुम्हें ज़रूर माफ कर देंगी."

"मत बताओ कि मुझे क्या कहना है!" अरैचने ने अशिष्टता से कहा. "तुम सिर्फ एक मूर्ख बूढ़ी औरत हो जो बहुत लंबी उम्र तक जीवित रही हो. शायद तुम्हारे पोते-पोतियां तुम्हारी बात सुनें. पर मैं नहीं सुनने वाली. मैं अपना ख्याल रखने में सक्षम हूं!"
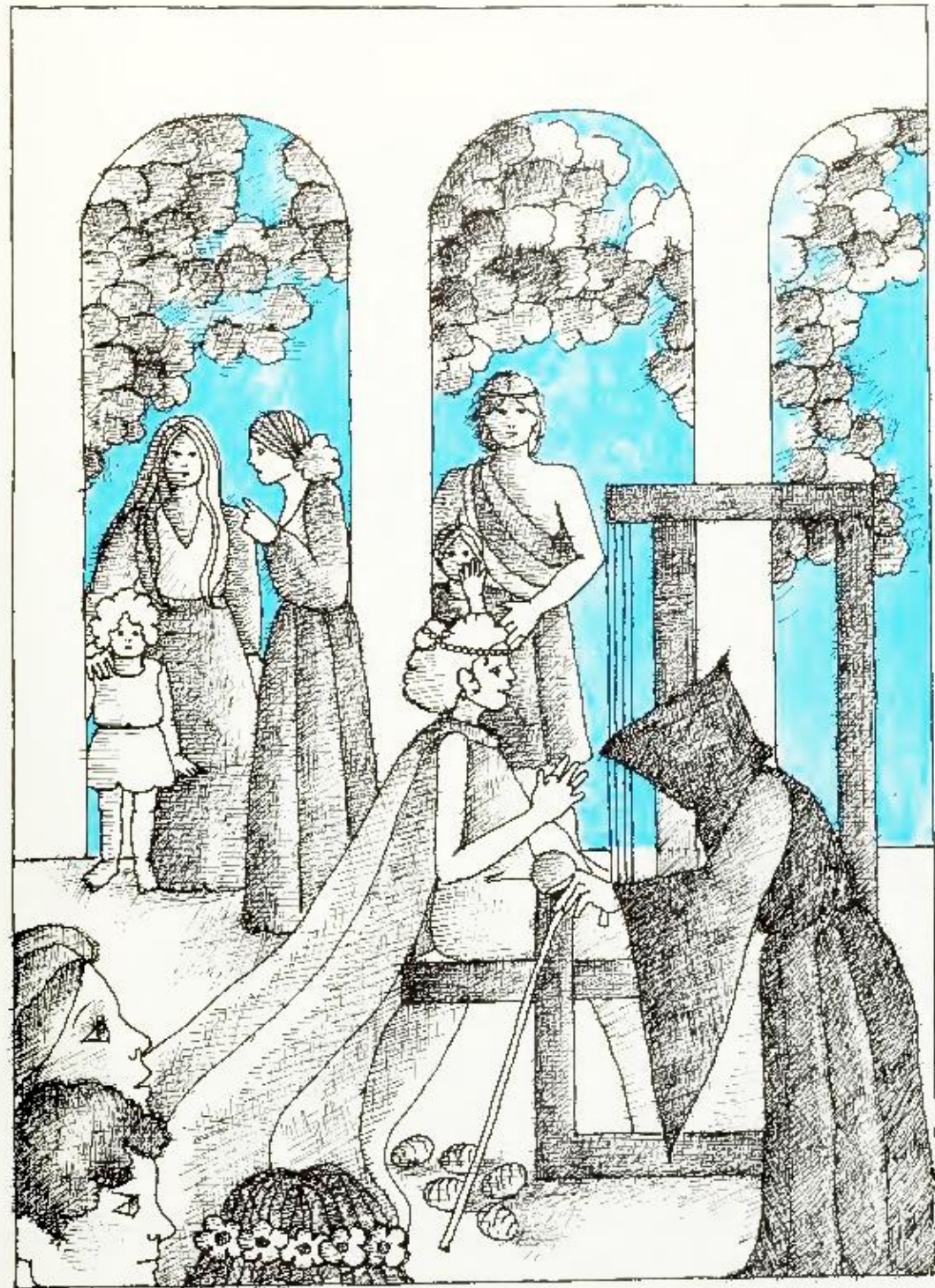
मिनर्वा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ. लेकिन अरैचने ने अभी अपने बात समाप्त नहीं की थी.

"अगर मिनर्वा इतनी काबिल हैं, तो वो यहाँ आकर उस बात को साबित क्यों नहीं करतीं?" अरैचने ने कहा. "मुझे किसी भी दिन उनके साथ प्रतियोगिता करने में खुशी होगी!'

"मिनर्वा यहाँ पहले से ही मौजूद हैं!" मिनर्वा ने ऊँची आवाज़ में कहा.

फिर मिनर्वा ने अपनी नकली विग और अपना पुराना लबादा उतारकर फेंक दिया. फिर उन्होंने अपना बेंत नीचे फेंका और सीधी और लंबी होकर खड़ी हो गईं.

अरैचने को छोड़कर कमरे में मौजूद सभी लोगों ने देवी मिनर्वा को प्रणाम किया. अरैचने थोड़ा डरी ज़रूर, लेकिन उसने अपने शब्द वापस नहीं लिए.

मिनर्वा ने भौंहें सिकोड़ लीं. “तो, तुम मेरे साथ प्रतियोगिता करना चाहती हो, है ना?” उन्होंने कहा. “देखो, तुम्हें उसका पछतावा होगा!”

अप्सराएँ एक और करघा लेकर आईं. उन्होंने उसे मिनर्वा के लिए तैयार किया. फिर दोनों साथ-साथ काम करने लगीं, लड़की और देवी. उनके हाथ मुलायम धागे पर आगे-पीछे उड़ने लगे. उन्होंने लाल धागे और नीले धागे, हरे धागे और पीले धागे का इस्तेमाल किया. यहां तक कि उन्होंने चांदी और सोने से बने धागों का भी इस्तेमाल किया. पूरे समय कमरे में किसी ने एक शब्द भी नहीं कहा.

मिनर्वा ने एक सुन्दर कपड़ा बनाया. वो अद्भुत नमूनों से भरा हुआ था. उसमें समुद्र के देवता नेप्च्यून थे, जो पानी से बाहर आ रहा थे. वहाँ उनके पिता, बृहस्पति - देवताओं का राजा सिंहासन पर बैठे हुए थे. और वहाँ पर मिनर्वा स्वयं अपनी ढाल लेकर खड़ी थी.

मिनर्वा ने कपड़े के चारों कोनों में से प्रत्येक में एक अलग कहानी बुनी थी. प्रत्येक ने एक ऐसे व्यक्ति के बारे में बताया जिसने किसी देवता या देवी को क्रोधित किया था. यह एकदम स्पष्ट था कि ऐसे लोगों का अंत में क्या हुआ.

कहानियाँ अरैचने के लिए एक चेतावनी थीं. लेकिन उस लड़की ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया. वो अपना कपड़ा बुनने में बहुत व्यस्त रही.
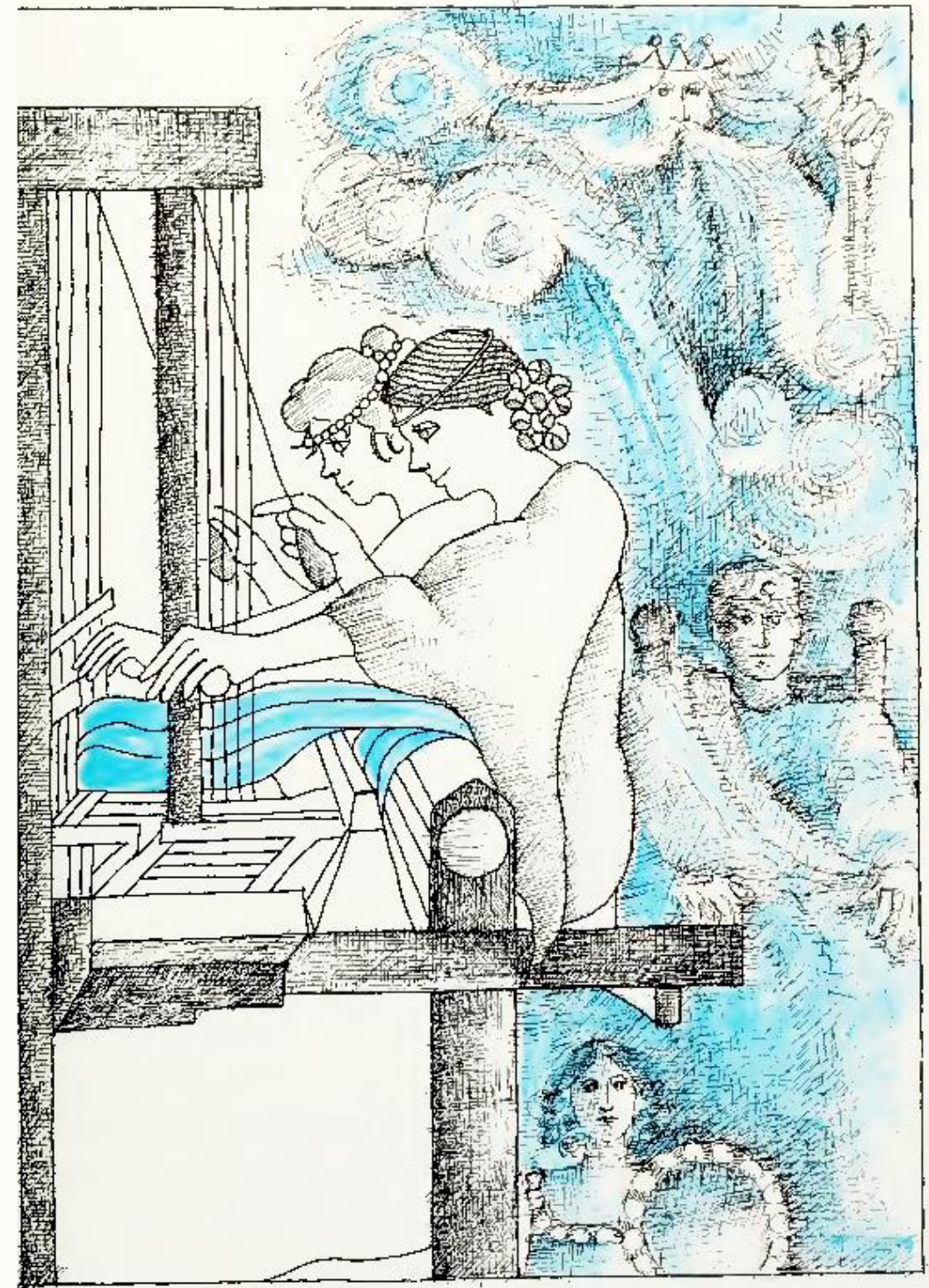
अरैचने का कपड़ा भी सुंदर था. लेकिन वो मिनर्वा से बहुत अलग था. वो चित्रों से भरा हुआ था जिसमें दिखाया गया था कि देवी-देवताओं ने लोगों को कैसे धोखा दिया था. चित्र में लेडा एक हंस पीछा कर रहा था. हंस वास्तव में बृहस्पति था जो लेडा पर एक नीच चाल खेल रहा था. जानवरों के रूप में अभिनय करते हुए बृहस्पति की अन्य तस्वीरें भी थीं. अरैचने ने जानबूझ कर ऐसा किया था ताकि वो युवा महिलाओं पर छींटाकशी कर सके.

वहाँ सूर्य का देवता अपोलो था, जो किसी और को मूर्ख बना रहे थे. और शनि, एक अन्य देवता थे जो कभी-कभी बहुत अच्छा व्यवहार नहीं करते थे.

मिनर्वा के कपड़े से पता चलता था कि देवता कितने अच्छे और मजबूत थे. लेकिन अरैचने के कपड़े से पता चलता था कि देवता जब चाहते तो वे बहुत बुरे भी हो सकते थे.

जब मिनर्वा और अरैचने का काम पूरा हो गया, तो उन्होंने एक-दूसरे के कपड़ों की ओर देखा. मिनर्वा ने देखा कि अरैचने ने क्या किया था. मिनर्वा को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ - अरैचने सचमुच परेशानी की मांग कर रही थी!
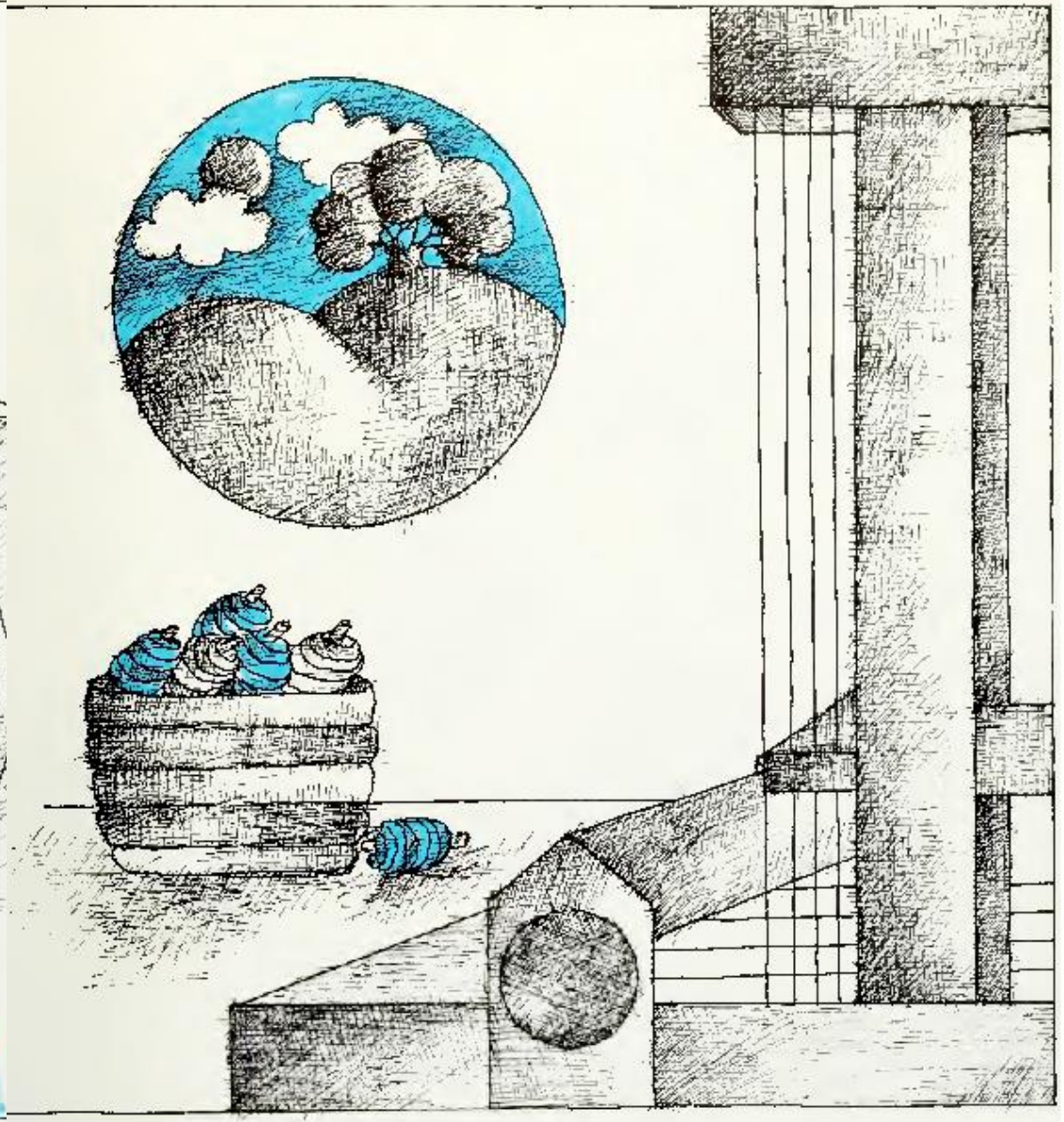
फिर भी, देवी को यह स्वीकार करना पड़ा कि अरैचने ने अच्छा काम किया है. उसने अपने कपड़े में कोई गलती नहीं की थी. और उसका नमूना सुंदर भी था भले ही उसमें देवी-देवता बहुत अच्छे नहीं लगते थे.

इससे मिनर्वा पहले से भी अधिक क्रोधित हो गईं. वो बहुत गुस्से में थीं, उन्होंने अपनी छड़ी उठाई और अरैचने के सिर पर दे मारी. मिनर्वा ने उसे बार-बार मारा.

अंततः अरैचने उस मार को बर्दाश्त नहीं कर सकी. उसके सिर पर चोट लगी थी और वो बहुत डर गयी थी. उसे नहीं पता था कि मिनर्वा आगे क्या करेगी. क्या पता, देवी उसे मार भी डाले?

अरैचने ने उसकी बजाए खुद की जान लेने का फैसला किया. वो कमरे से बाहर भाग गयी. फिर उसने एक पेड़ की शाखा के चारों ओर रस्सी लपेटी. उसने रस्सी के एक सिरे में फंदा बनाया और फिर फंदे से लटकने की कोशिश की.

लेकिन मिनर्वा असल में नहीं चाहती थीं कि अरैचने मर जाए. उनके मन में कुछ और ही था. इसलिए देवी ने अरैचने का पीछा किया. मिनर्वा पेड़ के ऊपर पहुंची और उन्होंने फंदे को अरैचने की गर्दन से खींचकर निकाल दिया.

"मैं तुम्हें खुद को मारने नहीं दूंगी." मिनर्वा ने कहा, "लेकिन मैं तुम्हें एक ऐसा सबक सिखाऊंगा जिसे तुम कभी नहीं भूलोगी!" मिनर्वा ने अरैचने के ऊपर कुछ जादुई पानी छिड़का. "तुम खुद को फाँसी नहीं लगाओगी, लेकिन अपनी बाकी ज़िंदगी लटकी रहोगी. और तुम्हारे बच्चे भी, और उनके बच्चों का भी वही हश्र होगा. तुम जल्द ही मेरा मतलब समझ जाओगी."
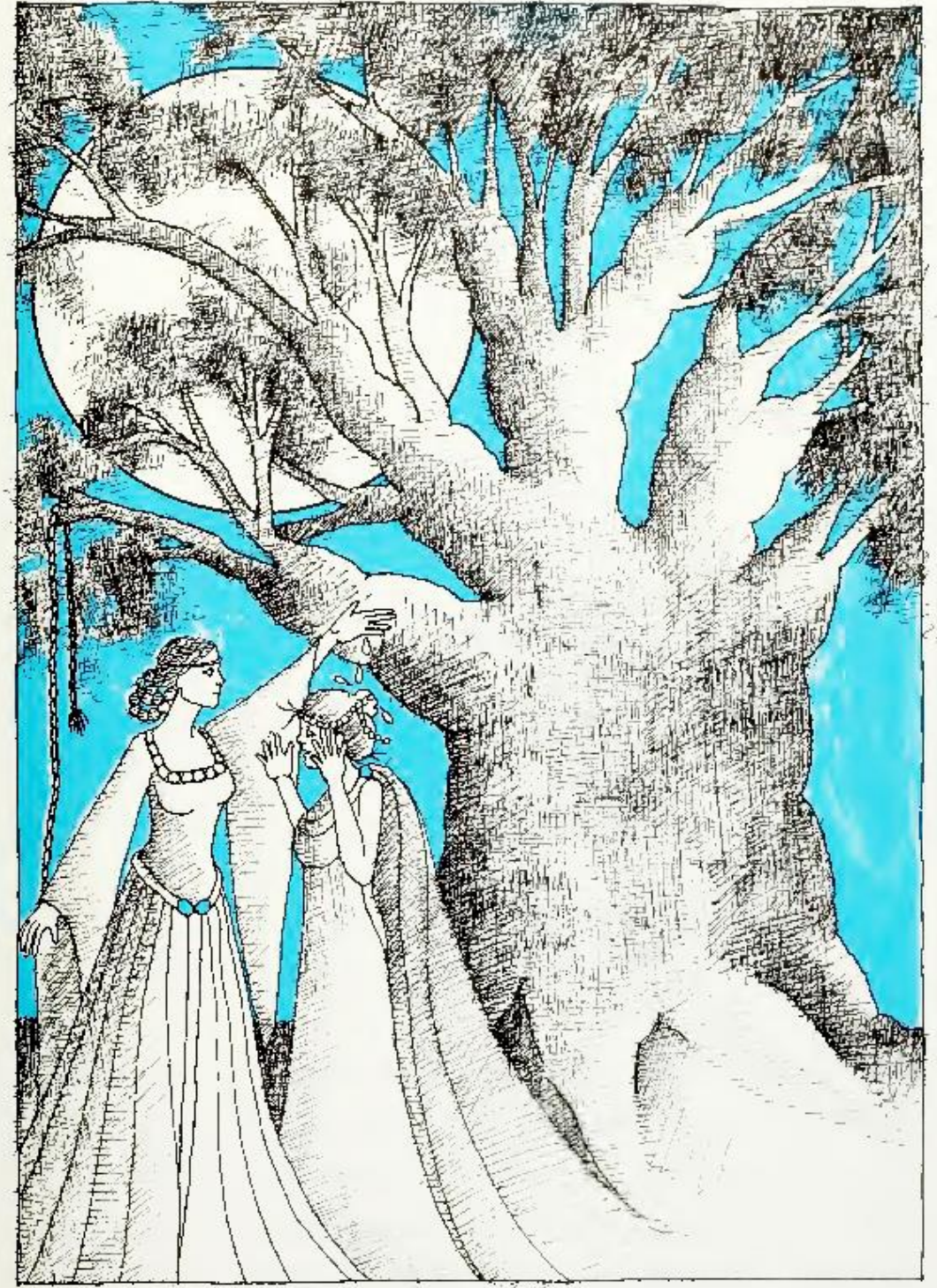
जब जादुई पानी अरैचने पर गिरा, तब कुछ अजीब होने लगा. सबसे पहले उसके बाल झड़े. फिर उसकी नाक और कान कट गये. उसका सिर बहुत छोटा हो गया और अंततः गायब हो गया. उसका शरीर छोटा और छोटा होता गया. उसके हाथ-पैर छोटे और छोटे होते गए.
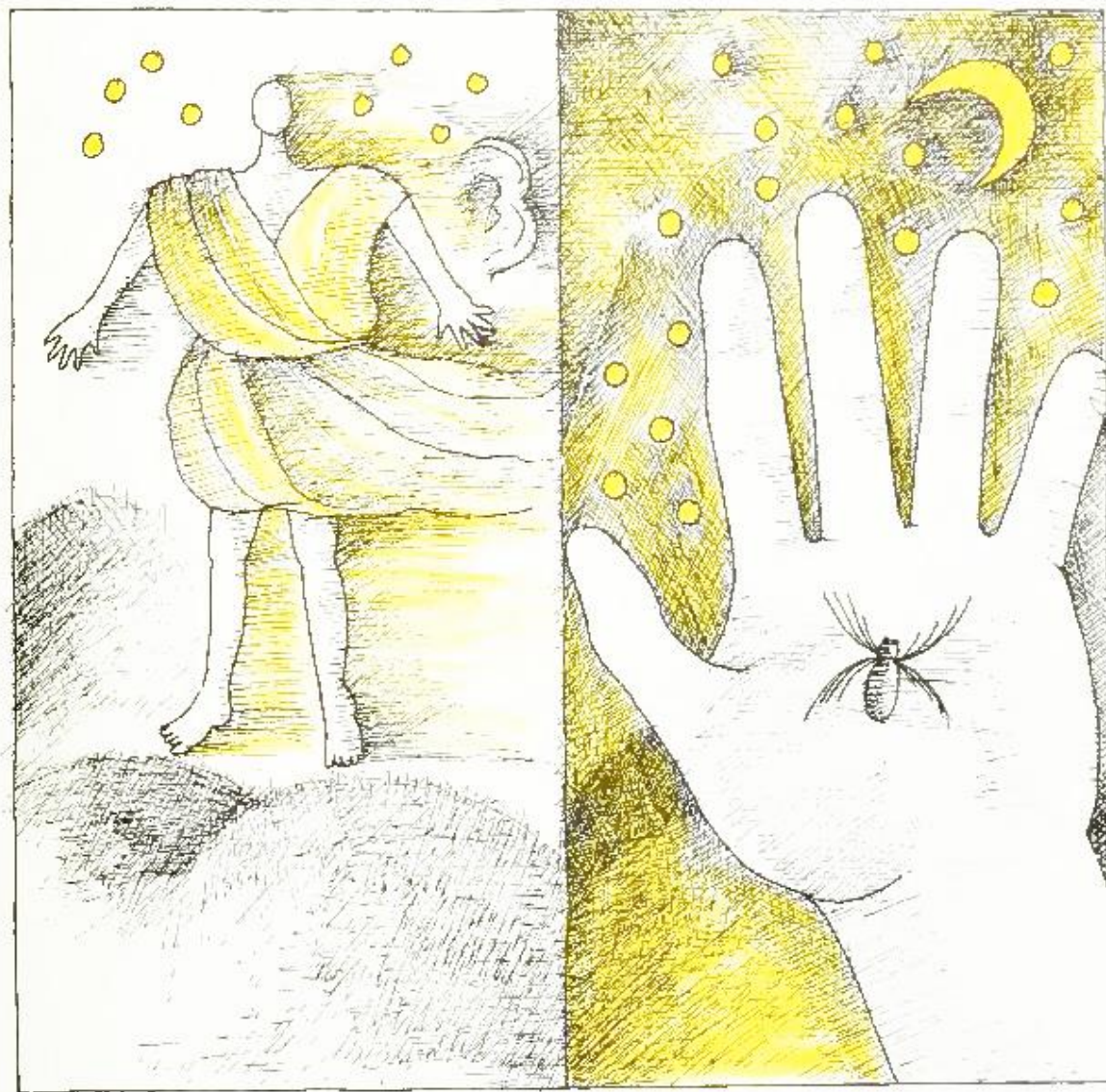
आख़िरकार, अरैचने के पास एक छोटे से गोल शरीर के अलावा कुछ भी नहीं बचा था, जिसके बाहर सिर्फ पतली टाँगें निकली हुई थीं. अरैचने मकड़ी में बदल गई थी!

"तुम अब अभी भी बुनाई कर पाओगी." मिनर्वा ने कहा, “लेकिन अब तुम शेखी नहीं बघार पाओगी.”

आज पूरी दुनिया में मकड़ियाँ हैं. उनका वैज्ञानिक नाम अरैचनिड है - अरैचने के ऊपर. वे अपने पेट से निकलने वाले मुलायम धागों से लटककर अपना जीवन बिताती हैं. उनके पास अरैचने की तरह ही एक विशेष प्रतिभा है और इसीलिए वे इतने सुंदर जाल बुन पाती हैं.

अंत